ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

बैकयार्ड कुक्कुट पालन

डॉ. आदित्य चंद्राकर एवं डॉ. नृपेन्द्र प्रताप सिंह

पशु राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संसथान करनाल, हरियाणा

घर के पिछवाड़े मे छोटे स्तर पर मुर्गियों को घरेलू श्रम और स्थानीय उपलब्ध दाना-पानी का उपयोग करते हुए बिना किसी विशेष आर्थिक व्यय के पालन पोषण को बैकयार्ड कुक्कुट पालन कहते है। कुक्कुट पालन आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को आर्थिक स्वावलंबन दिलाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

बैकयार्ड कुक्कुट पालन-

प्रायः दोहरे उपयोग वाली मुर्गियों का उपयोग बैकयार्ड कुक्कुट पालन के लिए किया जाता है।इसमे मुर्गियाँ घर की चारदीवारी के अंदर स्वतः विचरण करते हुए आपना खाना पीना खुद खोजती हैं। बैकयार्ड कुक्कुट को पालने के लिए किसी विशेष घर की आवश्यकता नहीं होती है । मुर्गीयों को प्रायः बांस की टोकरी अथवा कार्ड बोर्ड के बक्से मे रात को शिकारियो से बचाने के लिए रखा जाता है।ये अधिकतर रसोई अवशिष्ट, टूटे हुए अनाज के दाने, कीड़े मकोड़ों आदि को खाकर जिंदा रहती हैं। इन्हे सिर्फ कुछ मात्रा मे अलग से घटा हुआ दाना-पानी देने की आवश्यकता होती है। इन्हे अंडा देने के दिनों मे अच्छी शेल की क्वालिटी के लिए शैल ग्रिट अथवा मार्बल के छोटे छोटे टुकड़े प्रतिदिन 5-7 ग्राम/ पक्षी देना चाहिए।

बैकयार्ड मुर्गी पालन के लिए नस्ल-

बैकयार्ड मुर्गी पालन में नस्लों का चुनाव बेहद जरूरी है । अच्छी नस्ल की मुर्गी ही आपको बाजार में मुनाफा कमा दिला सकती है , इसलिए आपको बैकयार्ड मुर्गी पालन की उन्नत नस्लों का चुनाव करना चाहिए, ताकि आप अधिक से अधिक लाभ कमा सकें । जैसे, असील, कड़कनाथ, ग्रामप्रिया, स्वरनाथ, केरी श्यामा, निर्भीक, श्रीनिधि, वनराजा, कारी उज्जवल और कारी आदि ।

ऐसे करें बैकयार्ड मुर्गी पालन की शुरुआत-

इस व्यवसाय को शुरू करने के लिए आप ऊपर बताई गई नस्लों में से किसी भी नस्ल की मुर्गी का पालन कर इस बिजनेस को सरलता से शुरू कर सकते हैं । अगर आप देसी मुर्गी का पालन करते हैं , तो बाजार में देसी मुर्गी के 1दिन के चूजों की कीमत करीब 30 से 60 रुपए होती है और सालभर में देसी मुर्गी लगभग 160 से 180 अंडे देती हैं. देसी मुर्गी के अंडे की कीमतभी अधिक होती है. जिससे आपको अच्छा लाभ होगा ।

बैकयार्ड कुक्कुट पालन के लाभ

1. इसके लिए बहुत कम जमीन, श्रम एवं पूंजी की आवश्यकता होती है।

2. यह गाँव के लोगों को फसल की बर्बादी या अन्य आपात स्थितियों मे अतिरिक्त आय प्रदान कर जीने की सुरक्षा देता है।

3. यह बच्चों एवं औरतों मे प्रोटीन कुपोषण से मुक्ति दिलाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

4. यह अवशिष्ट पदार्थों जैसे रसोई अवशिष्ट कीड़े मकोड़ो को उच्च प्रोटीन वाले अंडे एवं मांस मे बदलकर खाद्य सुरक्षा एवं पर्यावरण सुरक्षा मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

5. मुर्गी के विष्टा से भूमि उपजाऊ होती है।

6. यह ग्रामीण परिवेश मे पिछड़े लोगों को स्वरोजगार प्रदान करता है।

बैकयार्ड कुक्कुट की विशेषताएँ

1. इनका प्लुमेज अर्थात पंख आकर्षक रंगीन होना चाहिए।

2. इनमे प्रतिकूल परिस्थितियों मे भी बढ्ने की क्षमता होनी चाहिए।

3. मुर्गियों मे ब्रूडीनेस नहीं होनी चाहिए।

4. इनके अंडे तथा मांस का स्वाद, सुगंध, रंग एवं पोषक तत्व देशी मुर्गी के समान होना

चाहिए।

5. इनके मांस मे वसा की मात्र कम होनी चाहिए।

6. इसमे बीमारी प्रतिरोधक क्षमता होनी चाहिए।

7. इंका वजन आठ सप्ताह मे कम से कम 1.25 किलोग्राम तथा आहार रूपान्तरण 2.2

होना चाहिए।

8. मृत्यु दर आठ सप्ताह की उम्र तक 2 प्रतिशत से कम होनी चाहिए।

9. अंडे से चूजे निकलना 80 प्रतिशत के आस पास होनी चाहिए।

बैकयार्ड कुक्कुट पालन हेतु आवास पर सब्सिडी-

बैकयार्ड कुक्कुट इकाई वितरण योजना अंतर्गत पक्षियों के पालन –पोषण, रख–रखाव तथा आवास व्यवस्था हेतु पृथक से किसी राशि की आवश्यकता नहीं होती है इसलिए आवास के लिए किसी प्रकार का पैसा नहीं दिया जायेगा | हितग्राही कुक्कुट पालन को घर पर ही करना होगा |

बैकयार्ड कुक्कुट पालन योजना पर हितग्राहियों को दिया जाने वाला अनुदान-

कुक्कुट, बत्तख या बटेर के चूजे के लिए राज्य सरकार सब्सिडी दे रही है | सामान्य वर्ग के लिए लागत का 75 प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए 90 प्रतिशत की सब्सिडी लाभार्थियों को दी जाएगी |

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in